रामधारी सिह दिनकर

चाँद का कुर्ता

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला,
“सिलवा दो माँ मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।

सनसन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुरकर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।

आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही कोई भाड़े का।”

बच्चे की सुन बात कहा माता ने, “अरे सलोने!
कुशल करें भगवान, लगें मत तुझको जादू-टोने।

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ।

कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा।

घटता-बढ़ता रोज किसी दिन ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की भी आँखों को दिखलाई पड़ता है।

अब तू ही ये बता, नाप तेरा किस रोज़ लिवाएँ,
सी दें एक झिंगोला जो हर रोज बदन में आए?”

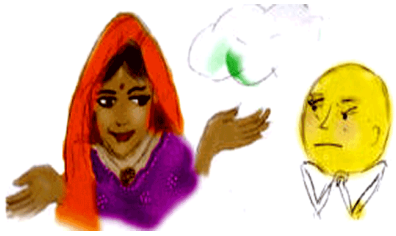

सूरज का ब्याह

उड़ी एक अफवाह, सूर्य की शादी
होने वाली है,
वर के विमल मौर में मोती उषा
पिराने वाली है।

मोर करेंगे नाच, गीत कोयल
सुहाग के गाएगी,
लता विटप मंडप-वितान से वंदन
वार सजाएगी!

जीव-जन्तु भर गए खुशी से, वन
की पाँत-पाँत डोली,
इतने में जल के भीतर से एक वृद्ध
मछली बोली-

“सावधान जलचरो, खुशी में
सबके साथ नहीं फूलो,
ब्याह सूर्य का ठीक, मगर, तुम
इतनी बात नहीं भूलो।

एक सूर्य के ही मारे हम विपद
कौन कम सहते हैं,
गर्मी भर सारे जलवासी छटपट
करते रहते हैं।

अगर सूर्य ने ब्याह किय, दस-
पाँच पुत्र जन्माएगा,
सोचो, तब उतने सूर्यों का ताप
कौन सह पाएगा?

अच्छा है, सूरज क्वाँरा है, वंश
विहीन, अकेला है,
इस प्रचंड का ब्याह जगत की
खातिर बड़ा झमेला है।”

 ISSN:2583-8849